CERTIFICATE OF ACCEPTANCE

KNOWLEDGE SCHOLAR

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

eISSN-2394-5362 **Impact Factor (SJIF) – 5.266**

This is to certify that our Editorial and Review Board Accepted the Research Paper of

डॉ.ललिता राठोड, असोसिएट प्रोफेसर , बलभीम महाविद्यालय, बीड

Topic: प्रगतिशील कविता में सामाजिक परिवर्तन

Your Research paper will be published in Volume: 05, Issue: 01, Jan. – Feb. 2018 i.e. Knowledge Scholar -An International Peer Reviewed E-Journal of Multidisciplinary Research an Online Journal.

KNOWLEDGE PUBLISHING, PRINTING AND DISTRIBUTION HOUSE
H. No. 1-27-15, Collector Office Road, Aurangabad. Maharashtra State. India.
Website: - http://www.knowledgepublishinghouse.com

Editor-in-Chief

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
me: 05, Issue: 01, Jan. – Feb. 2018 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

प्रगतिशील कविता में सामाजिक परिवर्तन

डॉ.ललिता राठोड
असोसिएट प्रोफेसर
बलभीम महाविद्यालय, बीड

नयी प्रगतिशील कविता भी अपने मूल रुप में सामाजिक कविता ही है, तथापि उसकी सामाजिकता उस सपाट और सूत्रात्मक सामाजिकता से काफी अलग है, जो प्रतिनिधी प्रगतिवादी कवियों में मिलती है। नयी प्रगतिशील कविता की सामाजिकता व्यक्तित्व के उचित विकास को भी महत्व देती है। यही कारण है कि यह व्यक्ति के सुख–दुख और उसकी समस्याओं से कतराई नहीं है।

प्रेमचंद यह मानते हैं कि श्रेष्ठ साहित्य और महान साहित्यकार स्वभावतः प्रगतिशील होते हैं। जहां तर प्रगतिशील साहित्य की ओर दुनिया के साहित्यकारों के आकृष्ठ होने का सवाल है वह सन 1935 के बाद है। प्रगतिशील साहित्य से प्रेरित होकर अंग्रेजी के प्रसिध्द लेखक ई.एम.फोस्टर ने लंदन में प्रगतिशीन लेखकों की बैठक सन 1935 में ली। इस बैठक में दो भारतीय लेखक सज्जाद जहीर और मुल्कराज आनंद उपस्थित थे। इससे प्रेरित होकर सन् 1936 में भारत में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की बैठक लखनउ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुई। अध्यक्ष पद से बोलते हुए प्रेमचंद ने सभी भारतीय साहित्यकारों को इस नयी दृष्टि को स्वीकार करने का आग्रह किया। सन् 1937 में रवींद्रनाथ टैगोर की अध्यक्षता में इसकी दूसरी बैठक कोलकाता में हुई। इस प्रकार हिंदी कविता के क्षेत्र में प्रगतिशील आन्दोलन का प्रारंभ सन् 1936 के बाद दिखाई देता है। यह आन्दोलन साहित्य के प्रति सोद्देश्यवादी और यथार्थवादी चिन्तन की परम्परा का वर्तमान सोपान है। यह साहित्य मूलतः मानवतावादी और अग्रगामी है। यह मानता है कि मनुष्य के विकास की प्रकिया अनंतकाल तक चलती रहेगी। हिंदी में यह प्रगतिवाद से अधिक प्रभावी रुप में दिखाई देता है, इसलिए अनेक विद्वान प्रगतिवाद को ही प्रगतिशील मानते हैं।

साहित्य में प्रगतिशील चेतना का आगमन छायावादी रोमैंटिकता के विरुध्द शोषित–पीड़ित जनता का पक्ष लेने और उसके बारे में लिखने के लिए हुआ। इस तरह कविता में यथार्थ चित्रण और